ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(2): 814-817
www.allresearchjournal.com
Received: 26-12-2016
Accepted: 29-01-2016

अनिल कुमार
भवदेपुर (अंबेडकर नगर), भवदेपुर गोट, रीगा, सीतामढ़ी, बिहार, भारत

Corresponding Author:
अनिल कुमार
भवदेपुर (अंबेडकर नगर), भवदेपुर गोट, रीगा, सीतामढ़ी, बिहार, भारत

बहुमुखी प्रतिभा के धनीः अज्ञेय

अनिल कुमार

सारांशः
अज्ञेय एक प्योगवाद साहित्यकार हैं। वे साहित्य के तमाम विधाओं में प्रयोग करते हैं, चाहे काव्य हो या गद्य। कविता में वे पुराने उपमानों, प्रतीकों, बिम्बों, मिथकों की ही उत्सर्ग नहीं करते वरन् भाषा के स्तर पर भी उनके अनेक प्रयोग मिलते हैं। गद्यकार के रूप में अज्ञेय ने उपन्यास, कहानी, नाटक, निबंध, रेखाचित्र, संस्मरण, अनुवाद आदि में अपनी विशिष्ट पहचान बनायी है। अज्ञेय जी ने अपनी बहुमुखी प्रतिभा के कारण जो साहित्य में प्रयोग किया वह एक धारा के रूप में विकसित हुई।

प्रस्तावनाः
डा. सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' (7 मार्च 1911–4 अप्रैल 1987 ई.) का कृतित्व और व्यक्तित्व बहुमुखी और नवोन्मेषी था। उन्होंने हिंदी काव्य विधा को जहाँ प्रयोगवाद और प्रकृति–सौंदर्य दिया, वहीं कहानी, निबंध, आलोचना, नाटक, यात्रा–वृत्तांत तथा पत्रकारिता के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ प्रदान कीं। हिंदी की साहित्यिक पत्रकारिता को अपूर्वता और गौरव प्रदान करने वाले प्रख्यात यायावर अज्ञेय भारतीय स्वातंत्र्य संग्राम के अनथक सेनानी थे। वे कई वर्षों तक भारत माता को पराधीनता की बेड़ियों से मुक्त कराने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निर्वहन करने के कारण कारागार में रहे और प्रिजन डेज एंड अदर पोएम्स, जैसी कृति की रचना कर एक नए इतिहास की रचना की। उनका शिक्षक, व्याख्याता, सत्यान्वेषी और चिंतक, विचारक रूप निश्चय ही स्पृहणीय है। वस्तुतः वह एक महान् साहित्यकार थे, जिनसे हिंदी का आधुनिक काल अनुप्राणित है।
अज्ञेय मूलतः कवि हैं। उन्होंने कालजयी, सर्वदेशीय, सर्वकालिक कविताओं की सर्जना की। 'भग्नदूत' (1993) 'चिंता', 'इत्यलम', 'इंद्रधन रौंदे हुए से', 'अपने–अपने अजनबी', 'एक बूंद सहसा उछली', 'हरी घास पर क्षण भर', 'बावरा अहेरी', 'अरी ओ करुणा प्रभामय', 'आंगन के पार द्वार' (साहित्य अकादमी पुरस्कार से पुरस्कृत), 'सुनहले शैवाल', 'कितनी नावों में कितनी बार' (भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार), 'क्योंकि मैं उसे जानता हूँ', 'सागर मुद्रा', 'पहले में सन्नाटा बुनता हूँ', 'महावृक्ष के नीचे', 'नदी की बाँक पर छाया' अज्ञेय की उल्लेखनीय काव्य पुस्तकें हैं।
अज्ञेय ने 'भवंती' में कविता की व्याख्या निम्न रूप में प्रस्तुत की है : ''नई और पूर्ववर्ती कविता में भेद यह है कि नई कविता बौद्धिक कविता है।'' [1] क्या सचमुच? इस कथन के दो अर्थ हो सकते हैं रू एक तो यह कि नई कविता में संवेदना की कमी है, इसका खंडन नई कविता की उत्कट भाव प्रवणता–जो कभी–कभी संपूर्ण तथा अव्यवस्थित संवेदन–संकुल तक पहुँच जाती हैं–करती है। दूसरा अर्थ यह होता है कि पहले की कविता बौद्धिक नहीं थी। यह भी क्या सच है? क्या कबीर या तुलसी या केशव कम बौद्धिक थे?'' [2]
अज्ञेय एक विराट फलक पर रचित काव्य के कवि हैं। उनकी काव्य–रचनाएँ, प्रीति, संवेदनशीलता तथा बौद्धिकता से भरी हैं। उनकी प्रारंभिक कविताओं में स्वच्छतावाद की प्रगल्भता है तथा परवर्ती कृतियों में अध्यात्मिक्ता की प्रबलता है। वह आजीवन सैनिक धर्म से प्रेरित रहे हैं तथा सदैव अतिचारी सत्ता के विरोधी रहे हैं। उनकी कविताओं में अनंत सत्ता के प्रति समर्पण भाव है। वह सहज ही चिंतन–लेखन के ऊर्ध्व धरातल का स्पर्श करने में सफल हुए। उनकी अधिकांश कविताएँ चिरंतन सत्य के संधान की अभिव्यक्ति हैं। इस हेतु वह सनातन परंपराओं का आधुनिकीकरण कर महतर मूल्यों से जोड़ते हैं और यथार्थ बोध का संधान करते हैं।
'असाध्य वीणा' में व्यष्टि–विसर्जन की प्रक्रिया वर्णित है। कवि का तरुमोह विराट मानवाकार, प्रशस्त आत्म चैतन्य, और सुदीर्घ जीवनानुभवों की पूंजीभूत भावना है–हम नदी के द्वीप हैं, हम नहीं कहते कि हमको छोड़कर/श्रोतस्विनी बह जाए/वह हमें आकार देती है/हमारे कोण, गलिया, अंतरीप उभार सैकतकूल/सब गोलाइयाँ उसकी गढ़ी हैं .../किंतु हम हैं द्वीप। हम धारा नहीं है/स्थिर समर्पण है हमारा।/हम सदा से द्वीप हैं स्त्रोतस्विनी के।/किंतु हम बहते नहीं हैं।/क्योंकि बहना रेत होना है।.../द्वीप हैं हम। यह नहीं है शाप यह अपनी नियति है...'' [3]

अज्ञेय की कविता का रस बौद्धिक–रस है, जिसमें व्यक्ति की महत्ता प्रकृति की विराटता एवं पराशक्ति की असीमता से संपृक्त है। अज्ञेय प्रकृति के रागात्मक संबंधों के कवि हैं। विभिन्न ऋतुएँ, ऋतुपरक दृश्यावलियाँ, छवियाँ, प्राकृतिक पदार्थों की उन्मुक्तता उनके प्रकृति का राग–रंग हैं। समुद्र और ज्योत्सना, माघ, फाल्गुन, चैत्र, सावन, क्वार, भादों, फल कचनार के जैसी कविताएँ उनके प्रकृति प्रेम का उदाहरण हैं। वह प्रतीक और बिंबों, उपमानों के कवि हैं। उनके सहज प्रतीकों में 'दो ओस बूंद' (नयन) 'प्यार'। (गगन) 'स्मृति' (शेफाली) 'नदी' (दर्द की रेखा) 'ब' (दुर्लभ अश्य) 'धूप' (कनक) 'शिशिर' (उदासी द्योतक) 'रेत' (मोह भंगाथ) 'गिरमिट' (अभिशापाथ) 'झरता पत्ता' (नश्वरता हेतु) 'सागर' (समष्टि बोध हेतु) तथा व्यष्टिबोध हेतु 'मछली' 'द्वीप' 'दीपक' नवालोक हेतु 'मेहरी' आदि प्रतीकों का प्रयोग मिलता है। वह प्रतीकों में स्वप्न, यौन, मिथकीय प्रतीकों का बाहुलता से प्रयोग करते हैं : ओ विशाल तरु/शत–सहन पल्लवन पतझरों ने/जिसका नित रूप संवारा/कितनी बरसातो, कितने खयोतों ने आरती उतारी/दिन भौरे कर गए गुंजरित/रात में झिल्ली ने/अनथक मंगल–गान सुनाए/ सांझ–सवेरे अनगिन/अनचीन्हें खग–कुल की मोदभरी क्रीड़ा–काकलि/डाली–डाली को कंपा गई/ओ दीर्घकाव्य/ओ पूरे झारखंड के अग्रज/तात, सखा, गुरु आश्रय/त्राता महच्छाय/ओ व्याकुल मुखरित, वन–ध्वनियों के/वृंदगान के मूर्त रूप/मैं तुझे सुनूं/देखू ध्याऊं/अनिमेष, स्तब्ध, संयत, संयुत निवाक्.....''

अज्ञेय अपनी कविता के शब्दों में स्पष्ट करते हैं कि प्रयोग सभी कालो में हुए, यद्यपि किसी एक काल में किसी विशेष दिशा में, प्रयोग करने की प्रवृत्ति होना स्वाभाविक है।

'जो व्यक्ति का अनुभूत सत्य है, उसे समष्टि तक कैसे उसे संपूर्णता तक पहुँचाया जाए–यही समस्या है, जो प्रयोगशीलता को ललकारती है।' इस तरह बिंब, भाषा के नए संस्कार और नए कथ्य ही प्रयोगवाद की भावभूमि है– मैं खड़ा खोले सभी कटिबंध पिंगल के/मुक्त मेरे छंद, भाषा, मुक्ततर, है मुक्त तम मन।[4]

अज्ञेय–काव्य में गीति–तत्त्व, प्रकृति के उपकरणों के प्रति असीम स्नेह, समर्पण–भाव है–सबेरे उठा तो/सबेरे उठा तो धूप खिलकर छा गई थी/और एक चिड़िया अभी–अभी आ गई थी/मैंने धूप से पूछा, मुझे थोड़ी गरमाई दोगी उधार?/ चिड़िया से कहा, थोड़ी मिठास उधार दोगी?[5]

प्रकृति से अज्ञेय को गहरा लगाव था जो उन्हें यायावरी से वरदान स्वरूप प्राप्त हुआ। यायावरी उनके हेतु अन्वेषण की आस्था बनी। एक प्रखर अतृप्ति का अनुभव एक अमिट प्यास से जलता हुआ हृदय किसी खोज में अज्ञात अनंत दिशाओं में सत्यान्वेषण के लिए भटकना ही अज्ञेय का जीवन दर्शन है।

'कितनी नावों में कितनी बार' काव्य कृति अज्ञेय के रचना–संसार का अनमोल मोती है। 'समय क्षण भर थमा' उनकी भावोत्सवी रचना है, जो पाठकों को आशा और उत्साह का संदेश देती है तथा सृष्टि के नैरतर्य का उद्भास कराती है–मद्धिमा लालिमा उरकी अलक्षित तिरोहित हो चली ही थी कि सहसा/फूट तारे ने कहा : रे समय,/तू क्या थक गया?/रात का संगीत फिर/तिरने लगा आकाश में!

अक्षय भाषा की कोमलता के बल पर माननीय निंतन तथा चेतना के अंतिम आयाम का सहज स्पर्श करते हैं। उन्होंने काव्य–वस्तु को ही, नहीं वरन भाषा और उसके उपकरणों के प्रयोगों से भाषाई क्रांति की। उनके कथ्य सूक्ष्म अंतदृष्टि का प्रतिफलन हैं तथा भाषा कृष्णा–सी प्रवहमान है। उन्होंने भाषा को गौरवमयी तथा अर्थपूर्ण बनाने के लिए नियास उदभिज, तितीर्ष, हविष्यान्न, शतजिस्व, सघाउदित, सद्यः साक्षात जैसे शब्दों का प्रयोग कर हिंदी कविता का अभिनव श्रृंगार किया है।

उनकी कविताओं में प्राकृतिक, ग्रामीण पौराणिक, वैज्ञानिक, लोक–विश्वासों एवं युगीन वैषम्य और जटिलताओं के विविध प्रतीक उपलब्ध हैं। सागर और मछली का निम्न प्रयोग उनकी बहुज्ञता का वैशिष्टय है–हमारा ज्ञान जहाँ तक जाता है/जो अर्थ हमें बतलाता है (कि सहलाता है)/वह सागर में नहीं/हमारी मछली में है/जिसे सभी दिशा में/सागर घेर रहा है।

अज्ञेय के काव्य–बिंब उनकी कविता को अर्थग्राहिणी तथा चित्रमयी बनाते हैं। घन बिंबों के माध्यम से उनकी काव्याभिव्यक्ति तथा जीवनानुभवों का सार्थक प्रगटीकरण मनोरम है। निम्न काव्य–बिंब उनकी कविता को अलौकिकता प्रदान करते हैं–झंझरे मटमैले प्रकाश के कंधे/जहाँ तहाँ कुहरे में लटक रहे हैं/रंग–बिरंगी हर थिंगली/संसार तक/सीली सड़कों पर कराहती ठिलती जाती/ये अंगार–नैन गाड़ियाँ।''[6]

अज्ञेय का काव्य–जीवन की असीमता और निःसंगता के भावों से ओत–प्रोत है। उसमें परिव्याप्त वैविध्य उनके शाश्वत चिंतन का आधार है। वह आंगन के पार जाना चाहते हैं जहाँ वह अनजान देश की भटकन का अनुभव करते हैं–अरे अंतःसलिल रेत /अनगित पैरों तले, रौंदी हुई अविराम/फिर भी घाव अपने–आप भरती/पड़ी सज्जाहीन/धूसर–गौर/निरीह और उदार/आंगन के पार/द्वार खुले/द्वार के पार आंगन/भवन के ओर–छोर/सभी मिले–/इन्हीं में कहीं खो गया भवन/धुंध से ढकी हुई/कितनी गहरी वापिका है तुम्हारी/कितनी लघु अंजली हमारी।[7]

असाध्य वीणा उनकी विलक्षण कृति है, जिसमें सूक्ष्मातिसूक्ष्म तथा विराट् ध्वनि बिंब मिलते हैं। गत्वर बिंब अज्ञेय का अर्थ वैशिष्टय है। अलंकारों में उन्हें मानवीकरण, अनुप्रास, रूपक, उप्रेक्षा, उपमा, विशेषण, विपर्यय आदि अधिक प्रिय हैं। दूज का चांद में वह प्राणों के दीपक के ब्रह्मांड रूपी देव के समक्ष नत और समर्पित हैं तथा जिजीविषा के शब्द बिंब को सहज ही प्रगट करते हैं। उनका छंद विधान अनेकार्थी है। गीत, कवित्त, बरवै, हरिगीतिका, रोला, मालिनी जैसे छंदों के वह विशेषज्ञ हैं। अतुकांत लेखन में वह बेजोड़ हैं। 'उत्तर प्रियदर्शी' में उनके विलक्षण नाट्य प्रयोग हैं। उनका कवि : मनीषी व्यक्तित्व बहुमुखी और प्रयोगधर्मा है। 'पहले मैं सन्नाटा बुनता हूँ' में गद्यात्मक लघुपद का आधिक्य है।

वस्तुतः वह छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद और नई कविता के समन्वित संस्कारों से प्रेरित और प्रयोगधर्मिता से ओत–प्रोत रचनाकार हैं।

अज्ञेय बिंब के कवि हैं। 'ताल पुराना/कुछ दादुर/गुडुप/' जापानी हाइकू का अनुवाद बिंब की भावभूमि का वाहक है।

अज्ञेय हिंदी के गौरवशाली उपन्यासकार हैं। उन्होंने चार उपन्यासों की सर्जना की, पर उनकी ख्याति का प्रमुख आधार महाकाव्यात्मक उपन्यास शेखर : एक जीवनी (भाग–एक, 1941 तथा भाग–दो, 1944) है। यह आत्मकथात्मक उपन्यास स्वानभूतियों का प्रतिपादन है। इसके कथापात्र व्यक्तिगत जीवन–सत्य के संवाहक हैं तथा पारिस्थितिक हैं। अज्ञेय कथा के केंद्र में अपने मूल पात्रों को प्रतिष्ठित करके नवीन जीवन–दर्शन का प्रतिपादन करते हैं। उनकी कथा कृतियों के पात्र रचनाकार के प्रतिरूप, उसकी अपनी संवेदनाओं की प्रतिकृति तथा चिंतन के अनुरूप हैं। अज्ञेय 'कालरात्रि' के परिप्रेक्ष्य में अपने विगत एवं क्रियागत जीवन की मर्मच्छवियाँ अभिवर्णित करते हैं।

हिंदी के मूर्धन्य समालोचक डॉ. रामप्रसाद मिश्र ने हिंदी का वस्तुपरक इतिहास भाग दो में (पृष्ठ 1435 पर) लिखा है कि 'उनका अनाहत व्यक्तिवादी जीवन–दर्शन, तेजस्वी आत्मपरक चरित्र–चित्रण, अभिनव संवेदन–लोक एवं मनोवैज्ञानिक मानवाकलन विश्वस्तरीय है, जिनके कारण 'रंगभूमि' एवं 'गोदान' के अतिरिक्त अन्य कोई हिंदी उपन्यास उनके निकट भी नहीं आ पाता तथा भाषा के लालित्य में तो प्रेमचंद भी अज्ञेय से कोसों पीछे पड़ जाते हैं। जैनेंद्र छोटे से गांधी लगने लगते हैं, अन्य बहुत दूर खड़े दीखते हैं।' यह आत्मरति एवं पितृग्रंथि का सार्थक विश्लेषण 'नदी के द्वीप में नव' मानव की मानसिक सशक्त विकृति प्रभावी है। इसमें व्यक्तिवाद की पराकाष्ठा है।

वास्तव में 'शेखर : एक जीवनी' (1941) हिंदी साहित्य में बेजोड़ रचना है। वह निश्चय ही हिंदी उपन्यास विधा के गरिमामय व्यक्तित्व है, जो निस्सीम गगन में सदैव देदीप्यमान रहेंगे।

अज्ञेय हिंदी के यशस्वी कथाकार हैं। उनकी अपने–अपने अजनबी (1961) एक उल्लेखनीय गद्य रचना है। उन्होंने अनुमानतः सवा सौ कहानियों की सर्जना की जो विपथगा (1997), परंपरा (1940), कोठरी की बात (1945), शरणार्थी (1948), जय दोल (1951), अमर वल्लरी (1955), ये तेरे प्रतिरूप (1961) आदि कथा–संग्रहों में समाविष्ट हैं। उनकी कहानियों में हिमालयी सत्ता के व्यवस्था के विरुद्ध चित्रण है। उन्होंने कहानियों में विभिन्न शैलियों को अपनाया है। उनकी कथाएँ प्रेमचंद कालिक तथा नई कहानियों के सेतु का काम करती है। उनकी अनेक कहानियाँ संस्मरणपरक रेखांकनपरक एवं व्यक्ति मनोविज्ञानपरक संवेदनायुक्त हैं। उनके पात्र समाज के बिगड़ते संबंधों की आधारशिला हैं।

संस्मरणपरक कथा साहित्य अज्ञेय की महत्त्वपूर्ण देन है। 'अरे यायावर रहेगा याद' एवं 'एक बूंद सहसा उछली' उनकी यात्रा–प्रसंगों पर केंद्रित कृतियाँ हैं। उनके संस्मरण प्रेरक, जीवंत और सशक्त है। 'स्मृति–लेखा' में उनके आत्म–संस्मरण हैं, जो बीसवीं शताब्दी के देश, काल को समझने में सहायक हैं। उनका कथा–साहित्य जटिल मन की अनसुलझी समस्याओं को केंद्रीय विषय बनाता है। उनकी कहानियाँ शिल्प की बंकिमता तथा चिंतन तीव्रता से निष्पन्न हैं। 'पठार का धीरज', 'शत्रु', 'मेजर चौधरी की वापसी', 'रोज' कहानियाँ प्रतीकात्मकता, वैचारिकता, यर्थाथपरकता के कारण अज्ञेय का प्रतिनिधित्व करती रहेंगी। 'उत्तर प्रियदर्शी' मंच की दृष्टि से एक श्रेष्ठ नाटक है जो उनकी बहुमुखी प्रतिभा का सूचक है।

'हिंदी साहित्य : एक आधुनिक परिदृश्य' उनका महत्त्वपूर्ण आलोचना–ग्रंथ है, जिसमें आधुनिक काल की मुख्य प्रवृत्तियों पर गहन चिंतन है। त्रिशंकु में उनके द्वारा साहित्य की अनेक विधाएँ विश्लेषित हैं। लिखि कागद कोरे। उनका प्रसिद्ध निबंध–संग्रह है, जिसमें 'भाषा और समकालीन समाज', 'श्रव्य कविता से दृश्य कविता तक', 'भाषा और अस्मिता', 'अख्यापन में काल की समस्या', 'समाज में लेखक की भूमिका', 'साहित्य में समय–बोध' आदि निबंध समायोजित है, जो उनकी व्याख्या–कला का प्रमाण हैं। पश्यंती तथा अंतरा कृतियाँ उनकी साहित्यिक तथा विचार–प्रधान उत्तेजक टिप्पणियों की व्याख्याएँ हैं। स्मृति लेखा उनकी आत्मकथा कृति है। उन्होंने अनेक पुस्तकों की भूमिकाएँ भी लिखीं हैं, जिनमें विषयाधारित उनके विचार तथा संबद्ध वैश्विक अवधारणाओं के प्रभावी रूप दिखाए गए हैं।

अज्ञेय के पास महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों के पत्रों का विशाल संग्रह रहा है, जिसका प्रकाशन यदि 'कुछ पुरानी चिट्ठियों' की भाँति हो तो पाठकों को उनके आसपास की दुनिया और वैश्विक संबंधों की यथार्थपरक जानकारी प्राप्त होगी जो उनकी रचनाधर्मिता को समझने में सहायक सिद्ध होगी। निबंध लेखन के क्षेत्र में उनका प्रदेय महत्त्वपूर्ण और उल्लेखनीय है। उनके वैचारिक, ललित, व्यंग्य, विनोदपूर्ण निबंध विश्व–निबंध साहित्य की अतुल्य संपदा है। आपके निबंध–त्रिशंकु (1945), सब रंग और कुछ राग (1956) ('कुट्टिचातन' के नाम से लिखित व्यंग्यपरक लेख), आत्मनेपद (1960) (वैयक्तिक संबंधों का निवैयक्तिक विश्लेषण), आल बाल (1971), भवंती (चिंतन प्रधान निबंध), अद्यतन (1977), जोग लिखी (1977), स्त्रोत और सेतु (1978), युवा संधियों पर (1982), धार और किनारे (1982), कहाँ है द्वारका (1982), छाया का जंगल (1981), स्मृति–छदा (1989) आदि में संग्रहित हैं। उनके निबंध उनके कवि–हदय के भावों से ओतप्रोत हैं। उनके वैचारिक निबंध उनके अतीत–प्रेम तथा समसामयिक यग बोध से ओतप्रोत हैं। इनके निष्कर्ष–सूत्र अत्यंत अभिनव तथा विचार प्रधान हैं। स्मृति लेखा के संस्मरण हिंदी साहित्य की बहुमूल्य संपदा हैं। विचारोत्तेजकता उनके इस क्षेत्र का प्रमुख प्रयोग है। उनके आदर्श प्रधान निबंध उनकी नवनवोन्मेषशालिनी प्रवृत्ति के द्योतक हैं। अज्ञेय का निबंध–साहित्य निश्चित ही उपयोगी सराहनीय जीवन की वैचारिक यात्रा है और उनके वैश्विक चिंतन का आस्वाद है। उनके चिंत्य और प्रेरणास्पद निबंध सदैव हिंदी अनुरागियों को नवीन प्रेरणा देते रहेंगे।

संपादन के क्षेत्र में प्रयोगवाद के जन्मदाता अज्ञेय का योगदान उल्लेखनीय है। तार सप्तक (1943) हिंदी यशस्वी कवियों की कविताओं का प्रथम पुष्प तथा द्वितीय संस्करण (1963) उनकी महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। प्रथम संस्करण की भूमिका का शीर्ष 'विवृत्ति और पुरावृत्ति' है। इसमें हिंदी काव्य जगत के जो मूर्धन्य प्रणेता सम्मिलित किए गए, उनमें गजानन माधव मुक्तिबोध (1917–1964), नेमिचंद्र जैन (1918), भारत भूषण अग्रवाल (1919–1975), प्रभाकर माचवे (1917–1991), गिरिजा कुमार माथुर (1919), रामविलास शर्मा (1912–2000), सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' (1911–1987) आदि। दूसरा तार सप्तक (1951) अज्ञेय की संपादन कला का अभिनव रूप है। इसमें जिन कालजयी रचनाकारों की कविताएँ संकलित की गई, उनमें भवानी प्रसाद मिश्र, हरिनारायण व्यास, शमशेर बहादुर सिंह, नरेश मेहता, रघुवीर सहाय और धर्मवीर भारती हैं। इसी प्रकार तीसरा सप्तक 1959 में प्रकाशित हुआ, जिसमें प्रयागनारायण त्रिपाठी, कीर्ति चौधरी, मदन वात्स्यायन, केदारनाथ सिंह, कुंवर नारायण, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, विजयदेव नारायण साही आदि। इस संकलन की कुछ महत्त्वपूर्ण कविताएँ 'मेरे अंतर', 'अंधेरे में', 'आत्म–संवाद' (मुक्तिबोध), 'कवि गाता है' (नेमिचंद्र जैन), 'मानने लग गया' (पृ. 85 : भारत भूषण अग्रवाल), 'कविता क्या है' (प्रभाकर माचवे), 'अधूरा गीत' (गिरिजा कुमार माथुर) ऐसी हैं, जिनका प्रभाव शताब्दियों तक रहेगा। शिवदान सिंह चौहान, आचार्य नंददुलारे वाजपेयी, नामवर सिंह, रामप्रसाद मिश्र, सूर्य प्रसाद दीक्षित आदि अज्ञेय को प्रयोगधर्मिता का जनक स्वीकार करते हैं। तार सप्तक 1, 2, 3 का कोई ऐसा कवि नहीं है, जिसने कालजयी रचनाधर्मिता के माध्यम से साहित्याकाश में पदछाप न छोड़ा हो। अज्ञेय के आंदोलन से जुड़े इन महान् कवियों ने अपनी सूक्ष्मानुभूतियों के प्रगटीकरण के लिए शब्द, बिंब, लय, भाव, आदर्श के वातावरण में सक्रियता दिखाकर कविता का प्रयोगवादी राजमार्ग निर्मित किया। उनका प्रकृतिजन्य संवेदना का स्वर प्रतीकात्मक काव्य का आधार है। शिल्प–प्रधान कविता की लयात्मकता अज्ञेय को संपादन के क्षेत्र में सदैव प्रशस्त करती रही। वह 1931–34 तक कठोर कारावास का दंड भोगते रहे तथा इसी काल में उन्होंने (कारागार में) शेखर एक जीवनी की रचना की।

1937 में उन्हें विशाल भारत का संपादन–भार दिया गया। अज्ञेय के संपादकत्व में विशाल भारत के चार चांद लग गए। उसके हर अंक पठनीय और संग्रहणीय बन गए। उन्होंने हर अंक को सजाया, दुर्लभ, स्तरीय और रोचक सामग्री से संपादित किया। 1946 तक उन्होंने विशाल भारत का सफल संपादन किया और आजादी प्राप्ति के पश्चात् वह हिंदी की नई कविता के अभिनव शृंगार में तल्लीन हो गए। उन्होंने प्रतीक पत्रिका का संपादन कर हिंदी की नई कविता को नई संवेदनात्मक दृष्टि, अभिनव शिल्प, बिंब और पहचान दिया। वह 1950 से 1955 तक आकाशवाणी में भारत सरकार के परामर्शदाता रहे। 1961 में वह कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय अमरीका में भारतीय भाषा विभाग के प्राध्यापक बने। वर्ष 1964 में दिल्ली लौटे और दिनमान के प्रथम संपादक बने। उनके संपादन काल में दिनमान ने हिंदी पत्रकारिता के श्रेष्ठ मानदंड स्थापित किए। 1936 में आगरा (उ.प्र.) से प्रकाशित दैनिक सैनिक (संस्थापक : कृष्णदत्त पालीवाल) के संचार संपादक के रूप में कार्य किया तथा हिंदी पत्रकारिता की गौरव वृद्धि की। विशाल भारत (कोलकाता) के अतिरिक्त उन्होंने बिजली (पटना), प्रतीक (इलाहाबाद), नया प्रतीक (नई दिल्ली) तथा वाक् (अंग्रेजी पत्र) का भी संपादन किया। नई दिल्ली से प्रकाशित नवभारत टाइम्स हिंदी दैनिक के प्रधान संपादक के रूप में उन्हें जो यश–प्राप्ति हुई वह पत्रकार जगत के लिए बहुमूल्य धरोहर है। पत्रकारिता में उनकी

बहुमूल्य सेवाओं से संतुष्ट होकर उन्हें प्रेस आयोग का सदस्य मनोनीत किया गया।

वह हिंदी पत्रकारिता के गौरव–पुरुष थे। उनके संपादकीय नवीनतम सूचनाओं का समुच्चय रहे। उनका चिंतन, विचार और अनुभव हिंदी पाठक संसार की बहुमूल्य धरोहर मानी गई।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के पश्चात् सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन ही ऐसे प्रखर संपादक और पत्रकार रहे, जिन्होंने हिंदी की साहित्यिक पत्रकारिता को समृद्ध बनाने का उल्लेखनीय कार्य किया। उन्होंने प्रतीक और नया प्रतीक पत्रिकाओं में जापानी, कोरियाई, रूसी, बुल्गेरियन, हंगरियन, फ्रांसीसी, जर्मन इत्यादि भाषाओं की रचनाओं के मूल तथा हिंदी अनुवाद प्रकाशित करने का विलक्षण कार्य किया। जापान की हाइकू रचनाओं का स्वयं हिंदी अनुवाद कर प्रकाशित किया। जापानी–छंद हाइकू के हिंदीकरण का प्रमुख श्रेय अज्ञेय को ही जाता है। यह सौगात उन्हें जापान–यात्रा से मिली थी और उन्होंने इसे हिंदी–संसार को भेंट किया था।

अज्ञेय साहित्य पुरुष के रूप में 1940 से प्रतिष्ठित हुए जिनका गहन प्रभाव हरिवंशराय बच्चन की दो चट्टानें, सुमित्रानंदन पंत की कला और बूढ़ा चांद तथा चक्रवाल की भूमिकाल्लेख में सहज मूल्यांकन से प्रगट होता है। रामस्वरूप चतुर्वेदी (अज्ञेय और आधुनिक रचना की समस्या) प्रेम सिंह (अज्ञेय : चिंतन और साहित्य) चंद्रकांत वांदिवडेकर (अज्ञेय और आधुनिक रचना की समस्या और साहित्य) अशोक वाजपेयी (फिलहाल) विद्यानिवास मिश्र (अज्ञेय संकलन की भूमिका) आदि ने अज्ञेय के साहित्यिक मूल्यांकन का उल्लेखनीय कार्य किया है।

समग्रतः अज्ञेय हिन्दी के अत्यंत प्रतिभाशाली साहित्यकार हैं। उन्होंने साहित्य की प्रत्येक विधा को अपने ज्ञान और कौशल से सँबारा है। गद्य और पद्य लेखन में उन्हें एक समान सफलता मिली हैं वे हरेक स्तर पर सृजन में प्रयोग करते हैं। प्रयोगशीलता ही उनकी सबसे बड़ी शक्ति है। हिन्दी–साहित्य में नवीन भाषा और शिल्प का समावेश करने में अज्ञेय की महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

निष्कर्षः

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि अज्ञेय अत्यंत प्रतिभाशाली रचनाकार हैं। उनकी प्रतिभा बहुआयामी है। वे कवि के साथ प्रख्यात गद्यकार भी हैं। गद्यकार के रूप में वे उपन्यास, कहानी, निबंध, समीक्षा, यात्रा–वृत आदि विधाओं में अत्यंत सफलतापूर्वक सृजन किया है। साथ ही वे एक अच्छे पत्रकार तथा अनुवादक भी हैं। उनकी रचनाओं पर अनेक देशी–विदेशी रचनाकारों की रचनाओं का प्रभाव पड़ा है। सबसे बड़ी बात है कि वे सबसे प्रभाव करके भी मौलिक रचनाकार के रूप में ख्यात हैं।

संदर्भ–सूचीः

1. भवन्ती–अज्ञेय, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, 1968, पृ.– 06
2. वही, पृ.– 7
3. असाध्य–वीणा–अज्ञेय, किताब महल, इलाहाबाद, 1964, पृ.– 17
4. वही, पृ.– 21
5. तार सप्तक, सं.– अज्ञेय, पृ.– 143
6. कितनी नावों में कितनी बार– अज्ञेय, भारती भंडार, काशी, 1971, पृ.– 47
7. वही, पृ.– 49